Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for BA part 3, paper 5

Topic:–शेरशाह के कार्यों की समीक्षा (An Evaluation of the Works of Shershah)

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में शेरशाह एक प्रतिभावान शासक के रूप में याद किया बड़ी जाता है। एक वीर विजेता और योद्धा, कुशल प्रशासक, धर्मपरायण शासक, कला एवं साहित्य के संरक्षक के रूप में शेरशाह की प्रशंसा तत्कालीन एवं आधुनिक इतिहासकारों ने की है। हो अफगानों की दुर्बल स्थिति को देखते हुए उसने अपने सीमित साधनों के बल पर ही उन्हें कि संगठित करने का प्रयास किया। अपनी अदम्य वीरता और कूटनीतिज्ञता के बल पर वह शीघ्र ही मुगल बादशाह हुमायूँ को हिंदुस्तान से बाहर खदेड़कर स्वयं ही भारत का मालिक बनकर बैठा। पाँच वर्षों की अवधि में ही उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर ली। उसने सिर्फ साम्राज्य की स्थापना ही नहीं की, बल्कि एक कुशल और सुदृढ़ प्रशासन द्वारा इसे स्थायित्व भी प्रदान किया। उसने राज्य की समृद्धि के लिए भू-राजस्व व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण सुधार किए, व्यापार-वाणिज्य को प्रोत्साहन दिया एवं मुद्रा-प्रणाली को व्यवस्थित किया। वह न्याय पर अत्यधिक बल देता था। न्याय के क्षेत्र में उसने समानता का सिद्धांत अपनाया। उसकी धार्मिक नीति भी उदार थी। उसने समस्त प्रजा को एकसमान समझा। शेरशाह ने जनहित के लिए भी अनेक कार्य किए। गरीबों एवं असहायों को राज्य की तरफ से सहायता दी गई। एवं शिक्षा और साहित्य को प्रोत्साहन दिया गया। शेरशाह ने अनेक इमारतों का भी निर्माण करवाया। उसके द्वारा बनाए गए दुर्गों में सबसे प्रसिद्ध रोहतासगढ़ का दुर्ग (उत्तर-पश्चिमी सीमा पर) है। उसने दिल्ली के निकट एक नया नगर एवं पुराना किला भी बनवाया। किले के अंदर एक सुंदर मस्जिद का भी निर्माण हुआ। शेरशाह के समय की स्थापत्य कला का सबसे सुंदर नमूना उसका स्वयं का सहसराम का मकबरा है। इसे पूर्वकालीन स्थापत्य शैली और बाद में विकसित स्थापत्य शैली के प्रारंभिक बिंदु का मिश्रण माना जाता है। इस तरह शेरशाह विभिन्न अद्भुत प्रतिभाओं का धनी व्यक्ति था। उसमें अनेक चारित्रिक गुण भी थे। शेरशाह के गुणों एवं उसकी प्रतिभा के अनुरूप ही इतिहासकारों ने उसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। एक इतिहासकार ने तो उसे 'मुसलमान शासकों में सर्वश्रेष्ठ' माना है। अनेक इतिहासकार उसे 'अकबर का मार्गदर्शक' भी मानते हैं। स्मिथ और आर० पी० त्रिपाठी का विचार है कि यदि दुर्भाग्य ने शेरशाह के जीवन का अंत नहीं कर दिया होता, वह बच गया रहता तो अकबर से भी अधिक महान होता तथा मुगल भारतीय इतिहास में स्थान नहीं पा सकते थे।' एस० आर० शर्मा ने शेरशाह की तुलना विश्व के महान शासकों-इंगलैंड के हेनरी सप्तम, प्रशा के फ्रेडरिक विलियम प्रथम और भारत के अशोक तथा महान कूटनीतिज्ञों कौटिल्य एवं मेकियावेली से की है। प्रो० यदुनाथ सरकार शेरशाह की तुलना मराठा शासक शिवाजी से भी करते हैं। निःसंदेह शेरशाह

मध्यकालीन भारत का एक महान शासक था। उसका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था भारत में मुगलों की सत्ता समाप्त कर पुनः अफगान राज्य की स्थापना करना एवं अपने प्रशासनिक सुधारों द्वारा स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास करना । इतिहासकार कानूनगो उसे एक महान सैनिक एवं राजनीतिज्ञ के रूप में देखते हैं, जिसके शासनकाल में सदियों से सताए गए हिंदुओं के लिए एक नए युग का आरंभ हुआ ।

शेरशाह के उत्तराधिकारी एवं सूर साम्राज्य का पतन (The Successors of Shershah and the Disintegration of the Sur Empire)- मई, 1545 में शेरशाह की मृत्यु के साथ ही द्वितीय अफगान साम्राज्य (सूर साम्राज्य) के पतन की प्रक्रिया आरंभ हो गई। शेरशाह के अयोग्य उत्तराधिकारी शेरशाह द्वारा परिश्रम से स्थापित अफगान राज्य की सुरक्षा नहीं कर सके। उनकी कमजोरी का लाभ उठाकर हुमायूँ पुनः भारत का बादशाह बन बैठा। पानीपत के द्वितीय युद्ध ने भारत में मुगल सत्ता की जड़ें पुनः जमा दी। अफगान हमेशा के लिए अपना राज्य खो बैठे।